रमेशचंद्र मदान

गर्दिश की ठोकरों ने उसे दुनिया का सबसे बड़ा जासूस बना दिया

एक वक्त वह था, जब बचपन में मां-बाप की मौत के बाद नन्हे से रमेश को सौतेली मां ने बे-घरबार करके छोटे-छोटे भाई बहनों के साथ बाहर, सड़क पर निकाल दिया. फिर शुरू हुआ दिहाड़ी, मजदूरी, रिक्शा-ठेले चलाकर रोटी जुटाने का सिलसिला. और आज यह एक वक्त है कि रमेशचंद मदान की जासूसी संस्था का जाल देशभर में बिछा है और उन्हें वर्ष १९८९ का दुनिया का सर्वश्रेष्ठ जासूस घोषित किया जा चुका है.

वह खूबसूरत लड़की गांव की हर गली में पागलों की तरह गाती फिरती. भागती दौड़ती कभी तांगे पर बैठकर स्टेशन चली जाती तो कभी तांगे के पीछे-पीछे दौड़ती गांव वापस आ जाती. तब कौन जानता था कि यह पगली एक दिन शहर के किसी होटल में कैबरे डांसर बनकर ग्राहकों को रिझायेगी और फिर एक दिन वह आयेगा, जब पूरी रियासत उसके नाम कर दी जायेगी. जब यह खबर शीतलागढ़ के राजघराने में पहुंची कि महाराजा ने अपनी वसीयत बदलकर सारी जायदाद एक कैबरे डांसर के नाम कर दी है तो राजघराने में जैसे भूचाल आ गया. सभी की नजरें

राजा की जायदाद पर गिद्ध की तरह टिकी हुई थीं और उन्हें इंतजार था महाराज की मौत का.

और सच्चाई कुछ इस तरह सामने आयी:

वह कैबरे डांसर, जिसके नाम महाराजा ने अपनी वसीयत की थी कोई और नहीं, बल्कि उसी रियासत के एक गांव के किसान की बेटी थी. खूबसूरती उसके लिए अभिशाप बन गयी थी. राजा के बेटे की नजर उस पर पड़ गयी. पूरी रियासत राजकुमार की गुंडागर्दी से आतंकित थी. अपने कुछ गुंडों को लेकर एक दिन वह लड़की के पास पहुंच गया. उसके साथ बलात्कार किया. लड़की की चीख सुनकर जब उसका पिता उसे बचाने आया तो गुंडों ने कुल्हाड़ी से उसकी हत्या कर दी. पिता की हत्या और अपनी इज्जत लुटने के हादसे से वह लड़की अपनी याददाश्त खो बैठी और लगभग पागल हो गयी. एक दिन स्टेशन पर ही किसी दलाल की नजर उस खूबसूरत लड़की पर पड़ी, वह उसे शहर ले आया. उसका इलाज कराया. इलाज से वह कुछ तो ठीक हो गयी, लेकिन पूरी तरह उसकी याददाश्त नहीं लौटी. उस दलाल ने उसे एक होटल मालिक को बेच दिया, जहां उसे कैबरे डांसर बनने और अपना जिस्म बेचने पर मजबूर होना पड़ा.

इस सारी घटना की जानकारी जब महाराजा को मिली तो उसने प्रायश्चित में अपनी वसीयत से राज घराने के सदस्यों को बेदखल कर दिया और अपनी समूची जायदाद उस मासूम लड़की के नाम कर दी.

आपको यह वाकया किसी जासूसी उपन्यास का सार लग रहा होगा, लेकिन यह कोई काल्पनिक जासूसी कथा का हिस्सा नहीं, बल्कि ऐसी सच्चाई है, जिसे उजागर किया 'गोलिएथ डिटेक्टिव प्राइवेट लिमिटेड' के मालिक और जासूस **रमेशचंद्र मदान** ने. इस केस की गुत्थियां सुलझाने में जासूस श्री मदान को कदम-कदम पर मौत का सामना करना पड़ा. राजा के बेटे ने मदान को जान से खत्म करवाने की कई कोशिशें कीं. उन पर कई बार गोलियां चलीं, जिसका जवाब मदान को भी गोलियों से देना पड़ा. लोहे के छड़ों से भी हमला हुआ, लेकिन वे बच गये और एक बड़ी गुत्थी सुलझाने में उन्हें कामयाबी मिली. इसी तरह बिल्ला-रंगा कांड, लाखौर कांड तथा दिल्ली में बैंक डकैती जैसे प्रसिद्ध कांडों की गुत्थी सुलझाने में भी मदान का खास हाथ रहा. जेम्स हेडली चेज और गुलशन नंदा के नाम से नकली उपन्यासों के प्रकाशन स्थल पर भी उन्हीं के इशारों पर छापा मारा गया और पुस्तक लेखन और प्रकाशन के इस फर्जी व्यापार का सफाया किया गया.

इस तरह की गुत्थियां सुलझाना और अपनी जान पर खेलना मदान का शौक ही नहीं, बल्कि उनकी खुराक भी है. अपनी जासूसी के बलबूते पर मदान ने एक या दो नहीं, बल्कि उन २६ लोगों को फांसी के फंदे से बचाया है, जिन्हें कत्ल के झूठे इल्जाम में अदालत द्वारा मौत की सजा सुनाई जा चुकी थी. निर्दोषों को फांसी के फंदे से बचाना अपने आप में एक विश्व कीर्तिमान है.

२८ अगस्त १९८९ को टोरंटो, (कनाडा) में 'काउंसिल ऑफ इंटरनेशनल इन्वेस्टिगेटर्स' ने मदान को वर्ष का दुनिया का बेहतरीन जासूस घोषित कर उन्हें 'इन्वेस्टिगेटर्स ऑफ द ईयर' पुरस्कार से सम्मानित कर स्वर्ण पदक और ट्रॉफी प्रदान की. यह भारत और एशिया के लिए गौरव की बात थी. रमेशचंद्र मदान ही पहले एशियाई और पहले अश्वेत व्यक्ति हैं, जिन्हें इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया, क्योंकि अभी तक यह स्वर्णपदक और ट्रॉफी अमरीका, ब्रिटेन और कनाडा के हिस्से में ही आती रही. इससे पहले भी श्री मदान को दो बार 'चाणक्य' और दो बार 'कौटिल्य' पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है.

दुनिया का यह बेहतरीन जासूस कैसा है? कहां रहता होगा वह? क्या वह सचमुच शरलक होम्स की तरह है या वह जेम्स बांड की तरह सुंदरियों से घिरा रहता है? क्या वह 'करमचंद' की तरह 'किटी' और गाजर के बिना कोई काम नहीं कर सकता? यही कुछ सवाल, कुछ जिज्ञासाएं हमें ले गयीं, दक्षिण दिल्ली में पहाड़ियों से घिरे रमेशचंद्र मदान के घर की ओर. बालकनी में गमलों के पीछे खड़े मदान हाथ हिलाकर इशारा करते हैं, 'आप ठीक जगह पहुंची हैं' और फिर हम दाखिल होते हैं, दुनिया के बेहतरीन जासूस के घर में. सीढ़ियां चढ़ने के बाद कई दरवाजे पार करके हम फिर सीढ़ियां उतरते हैं और दरवाजा खोलने के साथ ही मदान कहते हैं 'दिस इज माई वर्ल्ड' (यही मेरी दुनिया है). मदान की इस दुनिया में दर्जनों टोपियों, हैटों तरह-तरह की पोशाकों के अलावा हैं इधर-उधर बिखरे जासूसी के ढेर सारे तकनीकी उपकरण. छोटे से

अदालत का सारा दृश्य बदल गया

अदालत में उस दिन समूचा दृश्य ही बदल गया, जब ठेकेदार को मुनीम की हत्या के आरोप में फांसी की सजा से एकदम बरी कर दिया गया और पुलिस इंस्पेक्टर **अब्दुल्ला हक** को मुनीम का हत्यारा साबित कर दिया गया. पासा पलटा जासूस **रमेश मदान** की खोजबीन से.

मृतक मुनीम की 'पोस्टमार्टम' 'केस हिस्ट्री' का अध्ययन करने को बाद मदान के लगा कि मृतक के शरीर पर लगी गोलियां किसी विदेशी रिवाल्वर से नहीं चलायी गयीं, जैसा कि पुलिस जांच में दिखाया गया. रात भर मदान सो नहीं पाये और दो-तीन बजे उठकर एक देसी पिस्तौल से गोलियां चलायीं. गोली चलने से बने निशान का फोटो खींचकर रात को ही 'एनलार्ज प्रिंट' बनाया और उस निशान के आसपास पेन से घेरा बनाया. मृतक की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में लिखा था कि मृतक के शरीर में जिस जगह गोली लगी थी, वहां मांस के चिथड़े-चिथड़े से उड़ गये थे और आसपास बारूद लगा था. मदान देसी पिस्तौल वाले निशान के साथ उसका मिलान करने पर साफ-साफ नतीजे पर पहुंच गये. अगले दिन भरी अदालत में उन्होंने हत्या के हथियार के रूप में पुलिस द्वारा पेश की गयी विदेशी पिस्तौल के बारे में कहा 'यह मर्डर वेपन नहीं है.' जज को यकीन नहीं हुआ, तो उन्होंने एक देसी कट्टा मंगाकर उसके प्रदर्शन की आज्ञा मांगी.

कट्टे की खोज करने पर पता चला कि पूरे इलाके में सिर्फ एक ही देसी कट्टा है और वह भी इंस्पेक्टर अब्दुल हक के पास है, जो लंबे समय से छुट्टी पर हैं. खोजबीन करने पर वह देसी कट्टा अब्दुल हक के घर से बरामद हो गया. मदान के हाथ में जैसे ही वह कट्टा आया, वैसे ही उन्होंने अदालत में कहा– 'इसी देसी पिस्तौल से मुनीम की हत्या की गयी है.' इसके बाद उन्होंने वह एनलार्ज प्रिंट और पोस्टमार्टम रिपोर्ट जज के सामने पेश की. फिर तो हत्याकांड के रहस्य पर से एक के बाद एक सारी परतें खुलती गयीं कि किस तरह मुनीम अपनी खूबसूरत पत्नी को अक्सर ठेकेदार की मां की सेवा के लिए उसके घर सुबह छोड़ जाता और शाम को ले जाता था. धीरे-धीरे ठेकेदार और उसकी पत्नी के शारीरिक संबंध हो गये. इस बात की गांव में खूब चर्चा होने लगी. एक दिन इंस्पेक्टर हक किसी काम से मुनीम के घर गया. उस समय घर पर मुनीम की पत्नी ही थी. अब तो रोज ही मुनीम की अनुपस्थिति में वह उसके घर आता और उसकी पत्नी से जोर जबरदस्ती करता, और मुनीम को मारने की धमकी देता. डरी-सहमी मुनीम की पत्नी धीरे-धीरे इंस्पेक्टर की हर बात मानने को राजी हो गयी. दोनों ने निकाह करने का फैसला भी कर दिया. अब दिक्कत थी कि मुनीम को रास्ते से कैसे हटाया जाये. इंस्पेक्टर हक ने अपनी योजना के अनुसार थाने के गोदाम से पिस्तौल लेकर मुनीम की हत्या कर दी. जाहिर था कि इस कत्ल का इल्जाम ठेकेदार के सर आयेगा. हुआ भी यही

हत्या करने के बाद इंस्पेक्टर और मुनीम की पत्नी गांव से भाग गये और उन्होंने निकाह कर लिया. इस प्रकार एकदम नाटकीय तरीके से मुनीम की हत्या की गुत्थी सुलझी और ठेकेदार को फांसी की सजा से बाइज्जत बरी कर दिया गया. □